साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 11, अंक : 10 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 8 अक्टूबर 2025 से 14 अक्टूबर 2025 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

भारत की भू विविधता के संरक्षण के लिए कानूनी प्रावधान जरूरी- विशेषज्ञ

नई दिल्ली। लाखों साल में बनी भू धरोहरों को खत्म होने के बाद दोबारा नहीं प्राप्त किया जा सकता। इनके संरक्षण के लिए दुनियाभर में 229 ग्लोबल जियो पार्क हैं और भारत में भी इनकी संभावना है। भविष्य में भारत में भी जियो पार्क देखने को मिल सकते हैं। इंटरनेशनल यूनियन ऑफ जियोलॉजिकल साइंसेज (आईयूजीएस) की जियोहेरिटेज कमीशन के अध्यक्ष एसीयर हिलारियो ने नई दिल्ली स्थित यूनेस्को हाउस सभागार में आयोजित भारत की भू-विविधता और भू-धरोहर- इसका सतत विकास विषय पर आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान अपने वीडियो संदेश में यह बात कही।

सोसाइटी ऑफ अर्थ साइंटिस्ट्स, यूनेस्को और आईआईटी कानपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस सम्मेलन में देशभर से 100 से अधिक विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और नीति-निर्माताओं ने भाग लिया। सम्मेलन में भू-विविधता की भूमिका को राष्ट्रीय समृद्धि और पर्यावरणीय स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया गया। मुख्य अतिथियों में यूनेस्को के निदेशक टिम कर्टिस, भारत भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के उप महानिदेशक डॉ. अमित धारवडकर तथा यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क कार्यक्रम के डॉ. अलीरेजा आमिरकाजेमी उपस्थित रहे। सभी विशेषज्ञ इस बात पर एकमत थे कि भारत की भू-विविधता के संरक्षण हेतु आवश्यक विधायी प्रावधान किए जाएं तथा प्रभावी संरक्षण कार्यक्रमों को लागू किया जाए।आमिरकाजेमी ने अपने संबोधन में भारत में सतत भू-पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए संस्थागत ढांचे और स्थानीय समुदायों की भागीदारी पर बल दिया। यूनेस्को मुख्यालय पेरिस से ऑनलाइन आमंत्रित वक्ता क्रिस्टोफ वेंडरबर्गे (प्रमुख, यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क कार्यक्रम) ने बताया कि किसी क्षेत्र को यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क के रूप में मान्यता दिलाने के लिए समुदाय-आधारित पहल, स्थल-सूचीकरण, स्थानीय साझेदारी, सतत प्रबंधन योजनाएं और चरणबद्ध प्रक्रियाएं आवश्यक हैं। हिलारियो ने कहा, भू-भिलेखों का संरक्षण न केवल शिक्षा और आपदा तैयारी को मजबूत करता है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान को भी सुदृढ़ बनाता है। यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क के कार्यकारी सदस्य अलीरेजा आमिरकाजेमी ने एक सफल जियोपार्क के लिए आवश्यक तत्वों जैसे व्याख्या केन्द्र, आगंतुक प्रबंधन, समुदाय प्रशिक्षण तथा दीर्घकालिक निगरानी प्रणाली की रूपरेखा प्रस्तुत की। चर्चा सत्र में डॉ. बेन्नो बोअर ने कहा, इतनी समृद्ध भू-धरोहर होने के बावजूद भारत में अब तक एक भी यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क नहीं है। यह स्थिति अवश्य बदलनी चाहिए। उन्होंने भारत के वैज्ञानिक समुदाय से सामूहिक प्रयासों के माध्यम से यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क दर्जा प्राप्त करने का आह्वान किया। आयोजकों ने इस आयोजन को भू-विज्ञान का जागरण बताया, जिसने भारत के भू-संरक्षण प्रयासों को यूनेस्को के सतत विकास ढांचे से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रखा।सम्मेलन के संयोजक सतीश त्रिपाठी ने कहा कि जियोपार्क स्थापना के लिए जमीनी स्तर पर ठोस कार्यवाही आवश्यक है। विशेषज्ञों ने संयुक्त रूप से अनुसंधान सहयोग, नीतिगत सुधार और समुदाय-आधारित संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि भारत की अद्वितीय भू-धरोहर को संरक्षित और संवर्धित किया जा सके।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने असम के मुख्यमंत्री डॉ. सरमा से की सौजन्य भेंट

भोपाल से गुवाहाटी तक सीधी विमान सेवा शुरू करने की दिशा में करेंगे प्रयास

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने असम राज्य के दो दिवसीय प्रवास के दौरान रविवार की शाम असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा से गुवाहाटी स्थित मुख्यमंत्री निवास पर सौजन्य भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का असम के मुख्यमंत्री डॉ. सरमा ने पुष्पगुच्छ एवं प्रतीक चिन्ह देकर स्वागत अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भी डॉ. सरमा को महाकालेश्वर मंदिर का आकर्षक चित्र भेंट किया।

भेंट के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भविष्य में पर्यटन और व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए भोपाल से गुवाहाटी तक सीधी विमान सेवा भी शुरू करने की दिशा में भी प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि युवाओं, कलाकारों और विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग बढ़ाकर दोनों राज्यों के सांस्कृतिक संबंधों को और सशक्त किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि असम और मध्यप्रदेश हस्तशिल्प, सिल्क और बांस से निर्मित उत्पादों एवं पारम्परिक व्यापारिक सहयोग को बढ़ावा देंगे। इससे दोनों राज्यों के स्थानीय कारीगरों और उद्यमियों को अपने उत्पादों के लिए नए बाजार एवं रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे।

क्वांटम दुनिया के रहस्यों की खोज के लिए तीन वैज्ञानिकों को मिला भौतिकी का नोबेल पुरस्कार

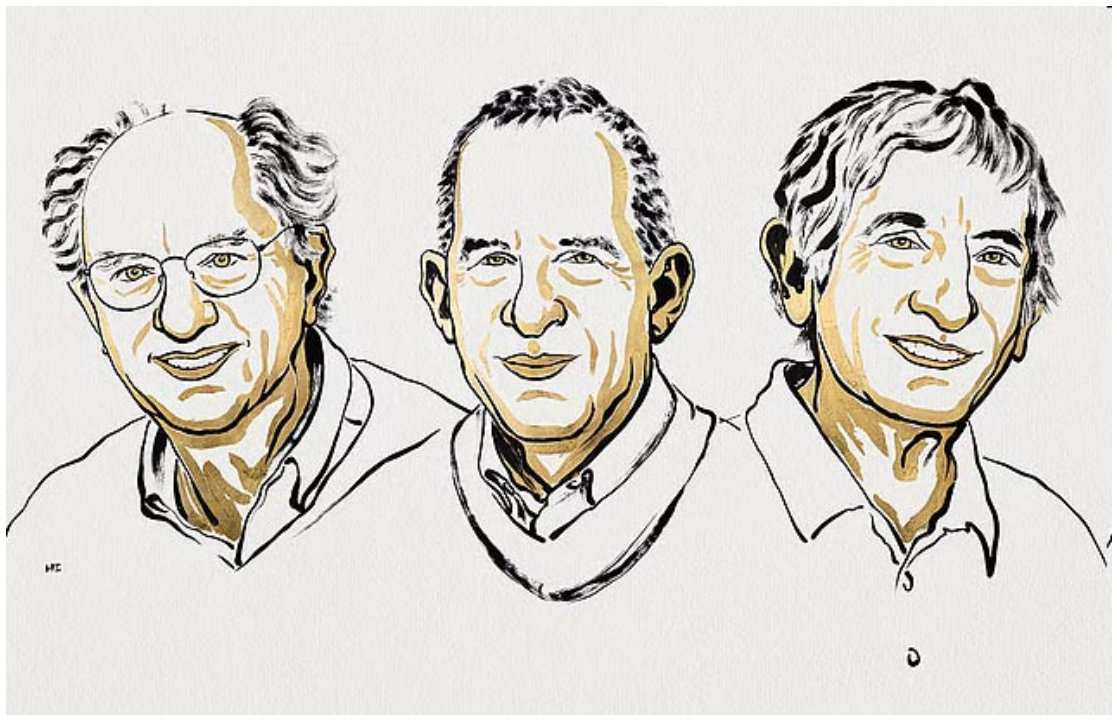

2025 के नोबेल पुरस्कारों की घोषणा का दौर शुरू हो चुका है। इसी कड़ी में आज भौतिकी के क्षेत्र में योगदान के लिए दिए जाने वाले नोबेल पुरस्कार की घोषणा की गई। इस साल भौतिकी का नोबेल पुरस्कार तीन वैज्ञानिकों जॉन क्लार्क, मिशेल एच डेवोरेट, जॉन एम मार्टिनिस को दिया गया है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया से जुड़े इन तीनों अमेरिकी वैज्ञानिकों को ये पुरस्कार %एक विद्युत परिपथ में मैक्रोस्कोपिक क्वांटम मैकेनिकल टनलिंग और एनर्जी क्वांटाइजेशन की खोज के लिए दिया गया है।

इस बारे नोबेल पुरस्कार समिति ने बयान में कहा, इस वर्ष का भौतिकी पुरस्कार अगले स्तर की क्वांटम तकनीक विकसित करने के लिए एक नई राह खोलता है, जिसमें क्वांटम क्रिप्टोग्राफी, क्वांटम कंप्यूटिंग और क्वांटम सेंसर शामिल हैं। गौरतलब है कि इन वैज्ञानिकों ने कई प्रयोगों के जरिए यह साबित किया है कि क्वांटम दुनिया के अजीबोगरीब गुण एक ऐसे सिस्टम में स्पष्ट रूप से दिखाए जा सकते हैं जिसे हाथ में पकड़ा जा सके। उनके सुपरकंडक्टिंग इलेक्ट्रिकल सिस्टम में एक स्थिति से दूसरी स्थिति में टनलिंग होती है जैसे यह सीधे एक दीवार के पार गुजर रहा हो। साथ ही, उन्होंने यह भी दिखाया कि यह सिस्टम ऊर्जा को क्वांटम मैकेनिक्स के अनुसार निश्चित मात्राओं में ग्रहण और उत्सर्जित करता है। देखा जाए तो यह पुरस्कार सिर्फ एक सम्मान नहीं, बल्कि क्वांटम तकनीक के भविष्य की दिशा बदलने वाली खोज का प्रतीक है। भौतिकी का यह नोबेल पुरस्कार हर साल फिजिक्स के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज द्वारा दिया जाता है। नोबेल प्राप्त करने वाले वैज्ञानिकों को इनाम के तौर पर कुल 11 मिलियन स्वीडिश क्राउन (करीब 12 लाख डॉलर) की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया जाता है। इससे पहले चिकित्सा के क्षेत्र का नोबेल पुरस्कार अमेरिका और जापान के वैज्ञानिकों को मिला था। वहीं रसायन विज्ञान के पुरस्कार को घोषणा बुधवार को की जाएगी। बता दें कि नोबेल पुरस्कार की शुरुआत महान वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल की वसीयत के आधार पर हुई थी। उन्होंने डायनामाइट के आविष्कार से जो धन कमाया, उसका एक हिस्सा विज्ञान, साहित्य और शांति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को सम्मानित करने के लिए रखा। भौतिकी पुरस्कार नोबेल की वसीयत में सबसे पहले उल्लिखित था, जो उनके समय में इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। इतिहास में नोबेल भौतिकी पुरस्कार विजेताओं में अल्बर्ट आइंस्टीन, पियरे और मैरी क्यूरी, मैक्स प्लांक और नील्स बोहर जैसे वैज्ञानिक शामिल हैं, जिन्होंने विज्ञान की दिशा ही बदल दी। बता दें कि 2024 में भौतिकी के नोबल पुरस्कार से जेफ्री ई हिंटन और अमेरिकी वैज्ञानिक जॉन जे हॉपफील्ड को नवाजा गया था। जेफ्री ई हिंटन को एआई का पितामह भी कहा जाता है। इन दोनों वैज्ञानिकों को संयुक्त रूप से यह पुरस्कार एआई और मशीन लर्निंग से जुड़ी नई तकनीकों के विकास के लिए दिया गया था। यह तकनीकें आर्टिफिशियल न्यूरॉन्स पर आधारित है। इसने मौजूदा समय की शक्तिशाली मशीन लर्निंग तकनीक की नींव रखी है। सरल शब्दों में कहें तो उन्होंने भौतिकी की मदद से आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क को प्रशिक्षित किया है, ताकि वो हम इंसानों की तरह ही सोच और सीख सके। 2023 में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार संयुक्त रूप से तीन वैज्ञानिकों पियरे एगोस्टिनी, फेरेन्क क्रॉस्ज और ऐनी एल%हुइलियर को उनके अभूतपूर्व प्रयोगों के लिए संयुक्त रूप से दिया गया था। इन तीनों वैज्ञानिकों को यह पुरस्कार उनके अनूठे प्रयागों के लिए दिया गया था। पियरे एगोस्टिनी, फेरेन्क क्रॉस्ज और ऐनी एल%हुइलियर ने अपने प्रयोगों में दिखाया है कि प्रकाश की बेहद छोटी तरंगे कैसे उत्पन्न की जाती हैं। इसका उपयोग उन तीव्र प्रक्रियाओं को मापने के लिए किया जा सकता है, जिनमें इलेक्ट्रॉन गति करते हैं या ऊर्जा में बदलते हैं। वहीं 2022 में तीन वैज्ञानिकों एलेन एस्पेक्ट, जॉन एफ क्लॉसर और एंटोन जिलिंगर को क्वांटम फिजिक्स में उनके योगदान के लिए भौतिक के क्षेत्र में संयुक्त रूप से नोबल पुरस्कार से नवाजा गया था।

वन्य जीव संरक्षण के लिये हुई रन फॉर वाइल्ड लाइफ

भोपाल वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में राज्य स्तरीय वन्य जीव सप्ताह में 5 अक्टूबर को 5वें दिन वन्य जीव संरक्षण के लिये विभिन्न अशासकीय संस्थाओं एवं पर्यावरण में रुचि रखने वाले लगभग 600 लोगों ने सहभागिता की। दौड़ वन विहार गेट क्रमांक-2 से डिपो चौराहा, पॉलिटेक्निक चौराहा और श्यामला हिल्स होते हुए बोट क्लब के पास वन विहार के गेट क्रमांक-1 पर समाप्त हुई। विजेताओं को मध्यप्रदेश राज्य वन्य प्राणी बोर्ड के पूर्व सदस्य श्री अभिलाष खांडेकर ने पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरित किये।

वन्य जीव सप्ताह में सुबह 10ः30 बजे से वनों में पर्यटन वन्य जीवों के संरक्षण में सहायक है%% विषय पर शिक्षक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें 22 प्रतियोगियों ने भाग लेकर विषय पर पक्ष एवं विपक्ष में अपने विचार रखे। इस अवसर पर वन विहार राष्ट्रीय उद्यान के संचालक श्री विजय कुमार और सहायक संचालक डॉ. रूही हक उपस्थित थीं। वन्य जीव सप्ताह के 6वें दिन 6 अक्टूबर को सुबह 6 से 8ः30 बजे तक पक्षी अवलोकन शिविर का आयोजन किया जायेगा। छात्र-छात्राओं के लिये सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक रेस्क्यू एवं वन्य प्राणी संरक्षण तथा अनुश्रवण के उपयोग में लिये जाने वाले उपकरणों की जानकारी देने के लिये कार्यशाला होगी। अन्य प्रतियोगिता में वाइल्ड लाइफ एवं नेचर एक्सपो कार्यक्रम सुबह 10 बजे होगा। साथ ही वन्य जीव संरक्षण के साथ विकास संभव है विषय पर सुबह 10ः30 से दोपहर 12 बजे तक वाद-विवाद प्रतियोगिता होगी। इसके अतिरिक्त मानव-वन्य जीव-सह-अस्तित्व, मिशन लाइफ तथा से नो टू प्लास्टिक से संबंधित विषयों पर पर्यटकों के लिये वॉक थ्रू क्विज कम एक्जीबिशन वन विहार स्थित विहार वीथिका, स्नेक पार्क और टाइगर बाड़े पर किया जायेगा।

विषाक्त कफ सिरप से बच्चों की मौत ने नियामकीय सतर्कता पर उठाए सवाल

दुनिया की फार्मेसी' के रूप में भारत की प्रतिष्ठा को उस समय झटका लगा जब खांसी का एक विषाक्त सिरप पीने से 14 बच्चों की मौत हो गई। इस सिरप में ऐसे औद्योगिक रसायन मिले जिन्हें आमतौर पर पेंट, स्याही और ब्रेक फ्लुइड में इस्तेमाल किया जाता है। इस घटना के बाद केंद्र और राज्य सरकारें सक्रिय हुईं और पर्चों पर कफ सिरप लिखने वाले चिकित्सक को गिरफ्तार कर लिया गया। सिरप बनाने वाली कंपनी के खिलाफ पुलिस जांच आरंभ कर दी गई और यह आदेश जारी किया गया कि दो साल से कम उम्र के बच्चों को कप सिरप नहीं दिया जाए। राज्य सरकारों ने भी

आपत्तिजनक दवाओं की बिक्री पर प्रतिबंध लगाना शुरू कर दिया। लगातार उठाए जा रहे इन कदमों से यह तथ्य नहीं छिपेगा कि इस हादसे से बचा जा सकता था। अपर्याप्त नियामकीय सतर्कता की कीमत नौनिहालों को अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। कफ सिरप में डाइएथिलीन ग्लाइकोल (डीईजी) और एथिलीन ग्लाइकोल (ईजी) जैसे जहरीले रसायनों की मौजूदगी बीते जमाने की बात होनी चाहिए थी। वर्ष2022 में गांबिया में करीब 70 और उजबेकिस्तान में करीब 18 बच्चों को भारत में बने कफ सिरप पीकर जान गंवानी पड़ी थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन की जांच में पाया गया था कि इन सिरप में डीईजी और ईजी की मात्रा अस्वीकार्य स्तर तक बढ़ी हुई थी।

डीईजी और ईजी प्रोपीलीन ग्लाइकोल के सस्ते विकल्प हैं जो औषधीय सिरप में प्रयोग में लाया जाता है। यह मिलावट मुनाफा बढ़ाने के लिए की जाती है। वर्ष 2023 में संबंधित दवा निर्माताओं का लाइसेंस रद्द करने के अलावा केंद्र सरकार ने यह अनिवार्य कर दिया था कि कफ सिरप निर्माता अपने नमूनों की जांच कराएं और निर्यात के पहले सरकार द्वारा प्रमाणित प्रयोगशाला से प्रमाणन हासिल करें। देश की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को प्रभावित करने वाले संकट को लेकर त्वरित प्रतिक्रिया के रूप में यह कदम असाधारण नहीं था।परंतु उस समय की तरह अब भी औषधि क्षेत्र की विनिर्माण प्रक्रियाओं की निगरानी करने वाले केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) से यह प्रश्न बहुत कम पूछा गया कि ऐसी मिलावट उसकी निगरानी से कैसे बच सकी। हालिया त्रासदी में सीडीएससीओ की प्रारंभिक जांच में खांसी की दवाओं को डीईजी और ईजी से मुक्त पाया गया। परंतु तमिलनाडु की एक प्रयोगशाला ने दोनों रसायनों की मात्रा अनुमति योग्य सीमा से अधिक पाई।एक बार फिर गलत कारणों से सुर्खियों में आए सीडीएससीओ ने खांसी की दवा और एंटीबायोटिक्स सहित 19 दवाओं की निर्माण इकाइयों में जोखिम-आधारित निरीक्षण शुरू किए हैं। उसने कहा कि इसका उद्देश्य गुणवत्ता में हुई चूक के कारणों की पहचान करना और ऐसी घटनाओं को भविष्य में रोकने के लिए प्रक्रियाओं में सुधार का सुझाव देना है।

देरी से उठाए गए ऐसे कदमों के बाद सरकार से दो सवाल बनते हैं। पहला, वर्ष2022 में गांबिया और उजबेकिस्तान में बच्चों की मौत के बाद ऐसी जांच क्यों नहीं शुरू की गई? दूसरा, सरकार ने केवल निर्यात के लिए बनाए गए खांसी के सिरप पर अधिक कठोर परीक्षण मानकों को लागू करने तक ही खुद को क्यों सीमित रखा, और घरेलू बिक्री के लिए बनाए गए सिरप को इससे बाहर क्यों रखा? आखिरकार, भारत में मिलावटी खांसी की दवा के सेवन से होने वाली मौतें दशकों से चिंताजनक रूप से बार-बार होती रही हैं।

वर्ष 1973 में चेन्नई में 14 बच्चों की मौत हुई थी, 1986 में मुंबई में 14 बच्चों की जान गई थी जबकि दिल्ली में 33 बच्चों की मौत हुई थी। वहीं 2020 में जम्मू में 12 बच्चों की मौत हुई थी। ये सभी मौतें डीईजी की विषाक्तता के कारण हुई थीं। देश में नकली दवाओं के बढ़ते कारोबार के साथ मिलाकर देखें तो ताजा हादसा किसी भी तरह भारत के हित में नहीं है क्योंकि देश औषधि क्षेत्र में अपनी वैश्विक हिस्सेदारी बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है। अमेरिका में कुल इस्तेमाल होने वाली जेनरिक दवाओं में भारत की दवाओं की हिस्सेदारी 40 फीसदी है, ब्रिटेन में 25 फीसदी और अफ्रीका में यह 90 फीसदी है। असमान और कमजोर नियमन बेईमान विनिर्माताओं को रोकने के लिए सही उपाय नहीं हैं।

सार्वजनिक स्थानों और मठ-मंदिरों में भिक्षावृत्ति करने वालों को रेस्क्यू करने के दिए निर्देश

इंदौर कलेक्टर श्री शिवम वर्मा की अध्यक्षता में भिक्षावृत्ति उन्मूलन अभियान को लेकर कलेक्टर कार्यालय में बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर श्री शिवम वर्मा ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि इंदौर जिले में पुन: भिक्षावृत्ति शुरू नहीं हो, इसके लिए विशेष अभियान चलाया जाए। विशेषकर बड़ा गणपति, रेलवे स्टेशन, सत्य साईं चौराहा, विभिन्न मठ-मंदिरों, आश्रमों एवं सार्वजनिक स्थानों पर जहां भिक्षावृत्ति की जाती है, उसे सख्ती से रोका जाए। इसके लिए विशेष रेस्क्यू टीमें बनायी जाए, जिसमें महिला एवं बाल विकास विभाग, नगर निगम, होमगार्ड, श्रम विभाग, राजकीय बाल संरक्षण आश्रम के अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल हो। साथ में विशेष पुलिस किशोर इकाई के अधिकारी और कर्मचारियों को भी इस टीम में शामिल किया जाए। ऐसी दो-तीन टीमें शहर में अलग-अलग स्थानों पर लगातार कार्रवाई करें, ताकि कहीं भी भिक्षावृत्ति नहीं हो। भिक्षा मांगना भी अपराध है और भिक्षा देना भी इसी श्रेणी में आता है। जो लोग भिक्षावृत्ति की सूचना देते है, ऐसे लोगों को नगद इनाम देकर पुरस्कृत किया जाए। कलेक्टर श्री वर्मा ने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि भिक्षावृत्ति करने वालों को रोकना ही नहीं, उन्हें आजीविका से जोड़ने के लिए भी योजनाएं बनायी जाए। उन्होंने आगे कहा कि भिक्षावृत्ति को रोकने के लिए रेस्क्यू करने वाली टीमें इस बात का विशेष ध्यान रखें कि जिन लोगों ने पूर्व में भिक्षावृत्ति छोड़ दी क्या वे पुन: इसी क्षेत्र में वापस आ रहे हैं। जो लोग विशेषकर किशोर एवं युवा नशा करते हैं या वे अपराधी प्रवृति के है, ऐसे लोग भी भिक्षावृत्ति के क्षेत्र में बड़ी संख्या में संलिप्त है। ऐसे असामाजिक और अपराधिक लोगों को सुधार गृह में भेजा जाये और उनकी बेहतर काउंसलिंग की जाए। सार्वजनिक स्थानों पर लिखे बच्चों को भीख नहीं, सीख दीजिए आओं मिलकर भिक्षावृत्ति मुक्त इंदौर बनाए। भिक्षावृत्ति रोकने के लिए गली एवं चौराहों पर नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से प्रचार किया जाए। इस कार्य में समाज सेवा महाविद्यालय इंदौर के छात्र-छात्राओं एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के युवाओं को जोडा जाए।

मध्यप्रदेश और असम के बीच वन्य जीव पर्यटन में साझेदारी के लिए होगी विशेष पहल- मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने काजीरंगा नेशनल पार्क का किया भ्रमण

चाय बागान में श्रमिकों और बहनों से किया आत्मीय संवाद

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने असम प्रवास के दौरान रविवार को विश्व प्रसिद्ध काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और चाय बागान का भ्रमण किया। उन्होंने बागान में चाय उत्पादन की प्रक्रिया का अवलोकन कर स्थानीय किसानों और श्रमिक बहनों से आत्मीय संवाद भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि चाय उद्योग असम का गौरव और अर्थव्यवस्था का प्रतीक है। परिश्रम, अपनत्व एवं सादगी की धरती असम और मध्यप्रदेश के बीच व्यापार-उद्योग के साथ ईको-टूरिज्म, वन्य जीव पर्यटन की दिशा में भी परस्पर सहयोग, विश्वास और साझेदारी को बढ़ाने के लिए विशेष पहल होगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में प्राकृतिक सौंदर्य और वन्यजीव संरक्षण की मनमोहक झलक देखी एवं हाथियों को स्नेह से गन्ना खिलाकर दुलार किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहां वन्यजीवों के संरक्षण संवर्धन के लिये नवाचारों के संबंध में जानकारी प्राप्त की और उद्यान भ्रमण के दौरान अजगर को प्राकृतिक आवास में छोड़ा। उल्लेखनीय है कि काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान एक सींग वाले गैंडे सहित पूर्वी हिमालयी जैव विविधता का केन्द्र है। इसे यूनेस्को द्वारा विश्व-धरोहर घोषित किया गया। यह उद्यान हाथियों, जंगली भैंसों, दलदली हिरणों और विभिन्न पक्षी प्रजातियों का आश्रय स्थल है। यह उद्यान वन्य जीवों की बड़ी संख्या के साथ वन्य जीव संरक्षण गतिविधियों के लिए भी विख्यात है।

सफेद चाद से ढंके पहाड़, हेमकुंड साहिब और लक्ष्मण मंदिर का प्रकृति ने कर दिया अनूठा श्रृंगार

नई दिल्ली अक्टूबर के प्रथम सप्ताह के जाते-जाते उत्तर भारत के पहाड़ों पर सर्दी ने दस्तक दे दी है। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर के ऊंचाई वाले इलाकों में सीजन की पहली बर्फबारी से मौसम ने करवट ले ली है। कश्मीर घाटी, लाहौल-स्पीति, केदार घाटी और हेमकुंड साहिब के पहाड़ों को बर्फ की सफेद चादर ने ढंक दिया है। इस खूबसूरत बर्फबारी से पर्यटकों के चेहरे खिल उठे हैं, जबकि स्थानीय लोगों ने भी सर्दी की शुरुआती आहट महसूस करनी शुरू कर दी है। उत्तराखंड में बद्रीनाथ, केदारनाथ और हेमकुंड साहिब समेत ऊंचाई वाले इलाकों में जबरदस्त बर्फबारी हुई है। हेमकुंड में स्थित लोकपाल लक्ष्मण मंदिर एक फीट मोटी बर्फ से ढंक गया है, जिससे मंदिर परिसर का दृश्य बेहद मनमोहक नजर आ रहा है। बताया जा रहा है कि लक्ष्मण मंदिर के कपाट 10 अक्टूबर को हेमकुंड साहिब गुरुद्वारे के साथ बंद होने हैं। कपाट बंदी से पहले इस प्राकृतिक श्रृंगार ने धार्मिक स्थल की खूबसूरती को मानों चार चांद लगा दिया है। बर्फबारी के बाद उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, चमोली, बागेश्वर और पिथौरागढ़ में मौसम विभाग (आईएमडी) ने भारी बारिश और बर्फबारी का येलो अलर्ट जारी किया है। बर्फबारी की वजह से ठंड का प्रकोप बढ़ गया है और तापमान में गिरावट दर्ज की जा रही है। इधर, हिमाचल प्रदेश में भी पहाड़ों ने सफेद चादर ओढ़ ली है। लाहौल-स्पीति, कुल्लू, मंडी और कांगड़ा जिलों में बर्फबारी से नजारे स्वर्ग जैसे हो गए हैं। हालांकि, तापमान में भारी गिरावट के चलते ठंड बढ़ गई है।

हमारे शहरों को जलवायु संकट से बचाने में फाइनेंस कमीशन की अहम भूमिका

शहरों और जलवायु परिवर्तन की कहानियां अक्सर जानी-पहचानी आपदाओं जैसे कि झुलसा देने वाली गर्मी, नदियों में उफान और दम घोंटने वाले धुएं के जरिये बताई जाती हैं। ये सभी आज के दौर की गंभीर चिंताएं हैं, जिन पर ध्यान देने की जरूरत है लेकिन गौर करने की एक अहम बात यह भी है कि सभी भारतीय शहर आज एक अधिक चिंताजनक बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं।

नए जोखिम किसी एक घटना के रूप में नहीं बल्कि एक व्यवस्थित बदलाव के रूप में सामने आ रहे हैं जो शहरों के विकास के तरीके, बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाए रखने और पूंजी जुटाने के तरीकों को भी बदल रहे हैं। इनमें से सबसे अहम बदलाव पलायन से जुड़ा है। विश्व बैंक की 2021 की 'ग्राउंडस्वेल' पहल का अनुमान है कि जलवायु संबंधी दबावों के कारण 2050 तक लगभग 21.6 करोड़ लोग अपने ही देश के भीतर विस्थापित होने पर मजबूर हो सकते हैं। यह पलायन अभी से शुरू हो गया है क्योंकि सूखे की वजह से ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन मुश्किल होता जा रहा है और समुद्र के बढ़ते जलस्तर के कारण लोग तटीय इलाकों को छोड़कर शहरों के मुख्य हिस्सों में जा रहे हैं।जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की छठी मूल्यांकन रिपोर्ट मानती है कि जलवायु परिवर्तन के कारणों के चलते बने प्रवासियों के लिए शहरी क्षेत्र ही आकर्षण का केंद्र बनेंगे। ऐसा इसलिए नहीं कि ये जगहें सुरक्षित हैं बल्कि इसलिए क्योंकि वहां सेवाएं, रोजगार और जीवन जीने की संभावना है। बिना सोची-समझी योजना के, नए आने वाले लोग उन अस्थायी बस्तियों में रहने को मजबूर हो सकते हैं जो बाढ़ और भूस्खलन जैसी आपदाओं से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले इलाकों में हैं। यह ध्यान रखना जरूरी है कि जो चीज पलायन के दबाव जैसी लगती है, वह असल में एक अवसर है। हालांकि, शहरों में जो व्यवस्थाएं हैं, उनकी स्थिरता अब और भी ज्यादा जोखिम में है। आईपीसीसी ने चेतावनी दी है कि जलवायु परिवर्तन अब सिर्फ अलग स्तर पर ही झटके नहीं देता है बल्कि यह बेहद जटिल और एक के बाद एक आने वाले खतरे पैदा करता है। बिजली, पानी, परिवहन और संचार के नेटवर्कों से जुड़े शहर यह महसूस कर रहे हैं कि एक विफलता अक्सर दूसरों को भी नीचे खींच लेती है। कई अध्ययनों से पता चलता है कि जब शहरों में वातानुकूलन तंत्र अचानक काम करना बंद कर दें तब मृत्यु दर अचानक बहुत अधिक बढ़ सकती है, खासतौर पर उन घरों में जहां गर्मी से बचाव के लिए कोई खास डिजाइन नहीं होता है। इसी तरह, बाढ़ भी अब सिर्फ उफनती नदी या एक तूफान तक ही सीमित नहीं है। अब ऊंचे ज्वार, भारी बारिश और नदियों की बाढ़ एक साथ आती हैं। ये साथ मिलकर ऐसी बाढ़ लाती हैं जो अलग-अलग खतरों से निपटने के लिए बनाए गए सुरक्षा इंतजामों को भी नाकाम कर देती है। असल में, समस्या यह है कि इन जोखिमों को अभी अलग-अलग तरीके से संभाला जा रहा है।

भविष्य में जलवायु अनुकूलन के लिए यह जरूरी है कि हम हर चीज को आपस में जोड़कर योजना बनाएं। जरूरी तंत्रों के लिए अतिरिक्त बैकअप रखें, प्राकृतिक और मानव निर्मित बुनियादी ढांचे को एक साथ जोड़ें। साथ ही, स्वास्थ्य और आवास से जुड़ी नीतियों को भी जलवायु परिवर्तन से निपटने के विमर्श का हिस्सा बनाएं।

पैसा अब भी सबसे बड़ी रुकावट बना हुआ है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की 'अनुकूलन अंतराल रिपोर्ट 2024' से पता चलता है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए विकासशील देशों को हर साल 194 से 366 अरब डॉलर की जरूरत है, लेकिन 2022 में उन्हें सिर्फ 28 अरब डॉलर ही मिल पाए। दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन के लिए जो धन मिलता है, उसका 10 फीसदी से भी कम हिस्सा बदलते हालात के हिसाब से ढलने यानी अनुकूलन पर खर्च होता है क्योंकि ज्यादातर धन जलवायु परिवर्तन को रोकने पर लगाया जाता है। विश्व बैंक का अनुमान है कि भारतीय शहरों को अपने बुनियादी ढांचे को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बचाने के लिए वर्ष 2050 तक 2.4 लाख करोड़ डॉलर की जरूरत होगी। अगर ऐसा नहीं किया गया तब हर साल बाढ़ से होने वाला नुकसान 4 अरब डॉलर से बढ़कर 30 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। शहरों के दिग्गजों को यह तय करना होगा कि वे बार-बार चीजों को दोबारा बनाते रहेंगे या लंबी अवधि के लिए ऐसे मजबूत इंतजाम करेंगे जो उनके राजनीतिक कार्यकाल के बाद भी काम करते रहेंगे। इस संबंध में 16वें वित्त आयोग का काम बहुत महत्त्वपूर्ण हो

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008